



Research Article

सोशल मीडिया के माध्यम से भारतीय लोकसंगीत का प्रचार-प्रसार

विभा सिंह

शोधार्थी, साहू राम स्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय
बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: * विभा सिंह

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.23320301>

सारांश

भारतीय लोकसंगीत देश की सांस्कृतिक विविधता, सामाजिक परंपराओं और सामूहिक जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित लोकगीत वहाँ की भाषा, रीति-रिवाजों, त्योहारों, ऋतुओं, धार्मिक मान्यताओं तथा लोकजीवन की अनुभूतियों को अभिव्यक्त करते हैं। आधुनिक तकनीक और डिजिटल माध्यमों के विकास ने लोकसंगीत के प्रचार-प्रसार के लिए नए अवसर उपलब्ध कराए हैं। YouTube, Facebook, Instagram तथा अन्य डिजिटल मंचों के माध्यम से लोक कलाकार अपनी प्रस्तुतियों को व्यापक श्रोतावर्ग तक पहुँचा सकते हैं। इन माध्यमों से पारंपरिक गीतों का ध्वनि एवं दृश्य रूप में अभिलेखीकरण भी संभव हुआ है। दूसरी ओर, लोकप्रियता की प्रतिस्पर्धा, लोकगीतों के मूल स्वरूप में परिवर्तन, कलाकारों को उचित श्रेय न मिलना तथा पारंपरिक संदर्भों की उपेक्षा जैसी चुनौतियाँ भी सामने आती हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में सोशल मीडिया के माध्यम से भारतीय लोकसंगीत के प्रचार-प्रसार की संभावनाओं, चुनौतियों और संरक्षण के उपायों का विवेचन किया गया है।

Manuscript Information

- ISSN No: 2583-7397
- Received: 05-07-2026
- Accepted: 23-08-2026
- Published: 30-08-2026
- IJCRM:5(4); 2026: 1030-1033
- ©2026, All Rights Reserved
- Plagiarism Checked: Yes
- Peer Review Process: Yes

How to Cite this Article

विभा सिंह, सोशल मीडिया के माध्यम से भारतीय लोकसंगीत का प्रचार-प्रसार. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(4):1030-1033.

Access this Article Online



www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: भारतीय लोकसंगीत, सोशल मीडिया, लोकगीत, डिजिटल माध्यम, सांस्कृतिक विरासत, लोक कलाकार।

1. प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति अपनी विविधता और समृद्ध लोकपरंपराओं के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशिष्ट संगीत परंपरा है, जो स्थानीय भाषा, सामाजिक जीवन, धार्मिक आस्थाओं और प्राकृतिक परिवेश से जुड़ी हुई है। लोकसंगीत का निर्माण सामान्य जनजीवन की अनुभूतियों और सामूहिक अनुभवों के आधार पर हुआ है। यह केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि समाज की स्मृतियों, मान्यताओं और सांस्कृतिक पहचान का वाहक भी है।

भारत में अवधी, ब्रज, भोजपुरी, बुंदेली, राजस्थानी, पंजाबी, बंगाली, असमिया, गढ़वाली तथा अन्य भाषायी क्षेत्रों में अनेक प्रकार के लोकगीत प्रचलित हैं। विवाह गीत, सोहर, कजरी, चैती, फाग, बिरहा, आल्हा, भजन और श्रमगीत इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इन गीतों में जन्म से लेकर विवाह तक के संस्कारों, ऋतु परिवर्तन, कृषि कार्यों, पारिवारिक संबंधों और सामाजिक परिस्थितियों का चित्रण मिलता है। परंपरागत रूप से लोकसंगीत का प्रसार मौखिक परंपरा, पारिवारिक संस्कारों, मेलों, उत्सवों और सामुदायिक आयोजनों के माध्यम से होता रहा है। समय के साथ रेडियो, ग्रामोफोन, कैसेट, टेलीविजन और फिल्मों ने भी लोकसंगीत को व्यापक पहचान प्रदान की। वर्तमान डिजिटल युग में सोशल मीडिया ने इस प्रक्रिया को एक नया आयाम दिया है। अब लोक कलाकार अपनी प्रस्तुतियों को स्थानीय मंचों तक सीमित रखने के स्थान पर देश-विदेश के श्रोताओं तक पहुँचा सकते हैं। यूनेस्को भी डिजिटल माध्यमों को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागरूकता बढ़ाने और उसके दस्तावेजीकरण के उपयोगी साधनों में शामिल करता है।

भारतीय लोकसंगीत और सोशल मीडिया का संबंध

सोशल मीडिया ऐसे डिजिटल मंचों का समूह है, जहाँ उपयोगकर्ता सामग्री साझा कर सकते हैं और उसके माध्यम से दूसरे लोगों से संवाद स्थापित कर सकते हैं। संगीत के क्षेत्र में इन मंचों ने कलाकारों, श्रोताओं, शोधकर्ताओं और सांस्कृतिक संस्थाओं के बीच संपर्क को सरल बनाया है।

YouTube पर लोकगीतों के वीडियो, पारंपरिक गायन की रिकॉर्डिंग, लोकवाद्यों की प्रस्तुतियाँ तथा कलाकारों के साक्षात्कार उपलब्ध कराए जा सकते हैं। Instagram और Facebook पर छोटी संगीत प्रस्तुतियों, कार्यक्रमों की झलकियों और सांस्कृतिक आयोजनों से संबंधित सामग्री साझा की जा सकती है। लाइव प्रसारण के माध्यम से कलाकार सीधे श्रोताओं से जुड़ सकते हैं। इस प्रकार सोशल मीडिया लोकसंगीत के प्रसार के साथ-साथ कलाकारों और श्रोताओं के बीच संवाद का माध्यम भी बन गया है।

डिजिटल मंचों पर उपलब्ध सामग्री का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि लोकसंगीत को केवल उसके मूल क्षेत्र के लोग ही नहीं, बल्कि अन्य भाषायी और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के श्रोता भी सुन सकते हैं। इससे विभिन्न क्षेत्रों की संगीत परंपराओं के प्रति जिज्ञासा और समझ विकसित होने की संभावना बढ़ती है।

लोकसंगीत के प्रचार-प्रसार में सोशल मीडिया की भूमिका

सोशल मीडिया ने लोक कलाकारों को अपनी प्रस्तुतियाँ साझा करने के लिए अपेक्षाकृत सरल और सुलभ मंच प्रदान किया है। पहले किसी कलाकार की प्रस्तुति को व्यापक स्तर पर पहुँचाने के लिए रेडियो,

टेलीविजन, संगीत कंपनियों या बड़े आयोजनों पर निर्भर रहना पड़ता था। अब कलाकार अपने मोबाइल फोन से भी प्रस्तुति रिकॉर्ड करके उसे डिजिटल मंच पर साझा कर सकते हैं। हालाँकि, व्यापक पहचान प्राप्त करने के लिए अच्छी रिकॉर्डिंग, नियमित प्रस्तुति और उपयुक्त दर्शक-संपर्क भी महत्वपूर्ण हैं।

लोकसंगीत के प्रसार में वीडियो का विशेष योगदान है। वीडियो के माध्यम से गीत के साथ उसकी गायन शैली, वेशभूषा, वाद्ययंत्र, प्रस्तुति की विधि और सांस्कृतिक परिवेश को भी देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, कजरी के वीडियो में वर्षा ऋतु की अनुभूति, सावन के झूले और ग्रामीण जीवन से संबंधित दृश्य गीत के भाव को अधिक स्पष्ट कर सकते हैं। इसी प्रकार बिरहा, आल्हा अथवा अन्य कथात्मक लोकगायन की प्रस्तुति में गायन शैली और वाद्य-संगति का दृश्य एवं श्रव्य अनुभव श्रोताओं को परंपरा से परिचित कराता है।

सोशल मीडिया के माध्यम से युवा पीढ़ी भी लोकसंगीत से जुड़ सकती है। छोटी वीडियो प्रस्तुतियाँ, कलाकारों के परिचय, लोकवाद्यों का प्रदर्शन तथा गीतों के अर्थ की व्याख्या लोकसंगीत को नए श्रोताओं तक पहुँचाने में सहायक हो सकती है। किंतु लोकसंगीत का वास्तविक ज्ञान केवल छोटे वीडियो देखने से प्राप्त नहीं होता; इसके लिए पारंपरिक गायकों से सीखना, गीतों के सामाजिक संदर्भ को समझना और उनके अभ्यास में भाग लेना भी आवश्यक है।

भारतीय लोकसंगीत की विविधता का डिजिटल प्रसार

भारत के विभिन्न क्षेत्रों की लोकसंगीत परंपराएँ अपने विषय, भाषा, लय, धुन और प्रस्तुति शैली में भिन्नता रखती हैं। सोशल मीडिया इन परंपराओं को एक-दूसरे से परिचित कराने का अवसर देता है।

उत्तर प्रदेश के संदर्भ में अवधी, ब्रज और भोजपुरी लोकगीत विशेष महत्व रखते हैं। अवधी क्षेत्र में सोहर, विवाह गीत और अन्य संस्कार गीत सामाजिक जीवन की विविध स्थितियों को व्यक्त करते हैं। ब्रज क्षेत्र में रसिया, फाग और होली के गीतों की विशिष्ट परंपरा है। भोजपुरी क्षेत्र में बिरहा, कजरी, चैता, सोहर तथा विवाह गीतों के माध्यम से लोकजीवन की भावनाओं और अनुभवों की अभिव्यक्ति होती है। इन गीतों की प्रामाणिक प्रस्तुतियों को डिजिटल माध्यमों पर साझा करने से क्षेत्रीय संगीत परंपराओं की पहचान व्यापक हो सकती है।

इसी प्रकार राजस्थान के मांगणियार और लंगा समुदायों की गायन परंपराएँ, बंगाल के बाउल गीत, पंजाब के लोकगीत तथा पूर्वोत्तर भारत की विभिन्न संगीत परंपराएँ डिजिटल माध्यमों के जरिए अधिक लोगों तक पहुँच सकती हैं। इन प्रस्तुतियों के साथ भाषा, कलाकार, क्षेत्र, गीत का अवसर और पारंपरिक वाद्यों का परिचय दिया जाए, तो सामग्री केवल मनोरंजन तक सीमित न रहकर सांस्कृतिक जानकारी का स्रोत भी बन सकती है।

लोकसंगीत के संरक्षण में सोशल मीडिया का योगदान

लोकसंगीत की अनेक परंपराएँ मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचती रही हैं। ऐसे में अनुभवी लोक कलाकारों के पास गीतों के अनेक रूप, स्थानीय धुनें, विशिष्ट गायन शैलियाँ और पारंपरिक ज्ञान सुरक्षित रहता है। यदि इन कलाकारों की प्रस्तुतियों का व्यवस्थित ध्वनि एवं दृश्य अभिलेखीकरण किया जाए, तो यह सामग्री भविष्य के लिए महत्वपूर्ण सांस्कृतिक दस्तावेज बन सकती है।

डिजिटल रिकॉर्डिंग के माध्यम से गीत के बोल, धुन, लय, वाद्य-संगति और प्रस्तुति शैली को सुरक्षित रखने में सहायता मिलती है। कलाकारों के साक्षात्कार से गीत की उत्पत्ति, उसके सामाजिक उपयोग और क्षेत्रीय विविधताओं से संबंधित जानकारी भी संकलित की जा सकती है। विश्वविद्यालयों, संगीत संस्थानों, सांस्कृतिक संगठनों और लोक कलाकारों के संयुक्त प्रयास से ऐसे डिजिटल संग्रह विकसित किए जा सकते हैं।

यूनेस्को की सांस्कृतिक विरासत संबंधी सामग्री में भी डिजिटल माध्यमों के उपयोग को जागरूकता, दस्तावेजीकरण और सांस्कृतिक ज्ञान के प्रसार के लिए उपयोगी माना गया है। फिर भी यह ध्यान रखना आवश्यक है कि किसी परंपरा की रिकॉर्डिंग मात्र उसके संरक्षण की पूर्ण गारंटी नहीं है। लोकसंगीत का जीवंत स्वरूप समुदाय के अभ्यास, कलाकारों की सक्रिय भागीदारी और नई पीढ़ी तक उसके हस्तांतरण से बना रहता है।

लोक कलाकारों के लिए नए अवसर

सोशल मीडिया लोक कलाकारों को अपनी पहचान स्थापित करने तथा कार्यक्रमों के लिए श्रोताओं और आयोजकों तक पहुँचने के अवसर प्रदान करता है। कलाकार अपनी प्रस्तुतियों के माध्यम से गायन शैली और विशिष्टता को सामने ला सकते हैं। डिजिटल मंचों पर उनकी उपस्थिति से सांस्कृतिक आयोजनों, शैक्षणिक कार्यक्रमों और संगीत समारोहों में आमंत्रित किए जाने की संभावनाएँ भी बढ़ सकती हैं।

कुछ परिस्थितियों में डिजिटल प्रस्तुतियाँ कलाकारों की आय के नए साधन भी बन सकती हैं। ऑनलाइन कार्यक्रम, दर्शकों का सहयोग, संगीत रिकॉर्डिंग और अन्य डिजिटल गतिविधियाँ उनके कार्य को व्यापक पहचान दिलाने में सहायक हो सकती हैं। हालाँकि, इनसे होने वाली आय निश्चित नहीं होती और यह मंच के नियमों, दर्शकों की संख्या, सामग्री की प्रकृति तथा अन्य परिस्थितियों पर निर्भर करती है। लोक कलाकारों को केवल सामग्री प्रस्तुत करने वाले व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि अपनी परंपरा के ज्ञान-वाहक के रूप में भी सम्मान दिया जाना चाहिए। उनके नाम, समुदाय, क्षेत्र और संगीत परंपरा का स्पष्ट उल्लेख करना आवश्यक है। इससे लोक कलाकारों की पहचान मजबूत होती है और उनकी सांस्कृतिक भूमिका को उचित मान्यता मिलती है।

सोशल मीडिया के माध्यम से लोकसंगीत के प्रचार की चुनौतियाँ

सोशल मीडिया पर किसी सामग्री की लोकप्रियता अनेक कारकों पर निर्भर करती है। इस कारण पारंपरिक लोकगीतों की सभी शैलियों को समान दृश्यता नहीं मिल पाती। अधिक लोकप्रिय या मनोरंजन-केंद्रित प्रस्तुतियाँ कभी-कभी उन गीतों की तुलना में अधिक प्रसारित होती हैं, जिनका सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व अधिक है, लेकिन जिन्हें प्रस्तुत करने और समझाने में अधिक समय लगता है।

दूसरी चुनौती लोकगीतों के मूल स्वरूप में अनावश्यक परिवर्तन की है। कुछ प्रस्तुतियों में गीत की भाषा, धुन, लय या संदर्भ को केवल त्वरित लोकप्रियता के लिए बदल दिया जाता है। रचनात्मक प्रयोग अपने आप में अनुचित नहीं है, लेकिन यदि परिवर्तन के कारण गीत का मूल सांस्कृतिक अर्थ अस्पष्ट हो जाए, तो उसकी परंपरागत पहचान प्रभावित हो सकती है।

कॉपीराइट और कलाकारों को श्रेय देने का प्रश्न भी महत्वपूर्ण है। किसी कलाकार की रिकॉर्डिंग को उसकी अनुमति के बिना साझा करना, दूसरे की प्रस्तुति को अपने नाम से प्रकाशित करना अथवा मूल गायक और समुदाय का उल्लेख न करना नैतिक और कानूनी समस्याएँ उत्पन्न कर सकता है। पारंपरिक लोकगीतों के मामले में भी किसी विशिष्ट रिकॉर्डिंग, संगीत संयोजन, नई रचना या प्रस्तुति पर अधिकारों का प्रश्न अलग से उत्पन्न हो सकता है।

इसके अतिरिक्त, ग्रामीण क्षेत्रों के सभी कलाकारों के पास अच्छी रिकॉर्डिंग सुविधाएँ, डिजिटल उपकरण या ऑनलाइन मंचों के संचालन का समान अनुभव नहीं होता। भाषा संबंधी बाधाएँ और तकनीकी जानकारी का अभाव भी उनकी डिजिटल भागीदारी को सीमित कर सकते हैं। इसलिए केवल सोशल मीडिया उपलब्ध करा देना पर्याप्त नहीं है; कलाकारों को प्रशिक्षण, तकनीकी सहयोग और उचित मार्गदर्शन भी मिलना चाहिए।

लोकसंगीत के प्रभावी प्रचार-प्रसार के उपाय

भारतीय लोकसंगीत के डिजिटल प्रचार को अधिक सार्थक बनाने के लिए सामग्री की गुणवत्ता, प्रामाणिकता और सांस्कृतिक संदर्भ पर विशेष ध्यान देना चाहिए। प्रत्येक प्रस्तुति के साथ गीत का नाम, क्षेत्र, भाषा, कलाकार का परिचय और गीत के अवसर का उल्लेख किया जा सकता है। जहाँ संभव हो, गीत के बोल और उनका सरल अर्थ भी प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

लोक कलाकारों के सहयोग से डिजिटल अभिलेख तैयार किए जाने चाहिए, जिनमें पारंपरिक गीतों के विभिन्न रूप, गायन शैली, वाद्ययंत्र और संबंधित सांस्कृतिक जानकारी सुरक्षित हो। विश्वविद्यालयों और संगीत विभागों के विद्यार्थी इन अभिलेखों के निर्माण, दस्तावेजीकरण और अध्ययन में भाग ले सकते हैं। इससे लोकसंगीत का अध्ययन केवल पुस्तकीय जानकारी तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि जीवंत परंपराओं से भी जुड़ सकेगा।

सांस्कृतिक संस्थाओं को क्षेत्रीय लोक कलाकारों के लिए रिकॉर्डिंग और डिजिटल संचार से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए। स्थानीय भाषाओं में सामग्री तैयार करना तथा विभिन्न क्षेत्रों की संगीत परंपराओं को समान महत्व देना भी आवश्यक है। कलाकारों की अनुमति, उचित श्रेय और उनके हितों का ध्यान रखते हुए ही सामग्री का प्रसार किया जाना चाहिए।

सोशल मीडिया को पारंपरिक शिक्षण और सामुदायिक आयोजनों का विकल्प बनाने के स्थान पर उनके पूरक के रूप में उपयोग करना अधिक उपयोगी होगा। विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में लोकसंगीत से संबंधित व्याख्यान, कार्यशालाएँ तथा कलाकारों के साथ संवाद आयोजित किए जा सकते हैं। इन कार्यक्रमों की डिजिटल रिकॉर्डिंग से सीखने और सांस्कृतिक जानकारी के प्रसार की संभावनाएँ बढ़ सकती हैं।

निष्कर्ष

सोशल मीडिया ने भारतीय लोकसंगीत के प्रचार-प्रसार और दस्तावेजीकरण के लिए नए अवसर उपलब्ध कराए हैं। इसके माध्यम से क्षेत्रीय लोकगीतों, पारंपरिक गायन शैलियों और लोकवाद्यों को व्यापक श्रोतावर्ग तक पहुँचाया जा सकता है। डिजिटल मंच लोक कलाकारों को अपनी प्रतिभा प्रस्तुत करने, नई पीढ़ी से जुड़ने और

अपनी सांस्कृतिक पहचान को सामने लाने में सहायता कर सकते हैं। साथ ही, लोकसंगीत की विविध परंपराओं को ध्वनि एवं दृश्य रूप में सुरक्षित रखने की संभावनाएँ भी बढ़ी हैं।

फिर भी सोशल मीडिया पर उपस्थिति को लोकसंगीत के संरक्षण का एकमात्र आधार नहीं माना जा सकता। लोकसंगीत की वास्तविक शक्ति उसके सामुदायिक जीवन, मौखिक परंपरा, सांस्कृतिक संदर्भ और पीढ़ी-दर-पीढ़ी होने वाले हस्तांतरण में निहित है। इसलिए डिजिटल प्रचार के साथ पारंपरिक कलाकारों का सम्मान, प्रामाणिक प्रस्तुति, उचित श्रेय, सांस्कृतिक संवेदनशीलता और स्थानीय समुदायों की भागीदारी सुनिश्चित करना आवश्यक है। इन सिद्धांतों के आधार पर सोशल मीडिया भारतीय लोकसंगीत की पहचान को व्यापक बनाने तथा उसकी समृद्ध परंपरा को भावी पीढ़ियों तक पहुँचाने का प्रभावी माध्यम बन सकता है।

संदर्भ सूची

1. UNESCO. Ethics and intangible cultural heritage [Internet]. Paris: UNESCO. Available from: <https://ich.unesco.org/en/ethics-and-ich-00866>
2. Pradhan RS, Goswami A. Navigation of cultural heritage in the digital age: the role of social media platforms in the preservation of selected folk performances of Odisha. Preservation, Digital Technology & Culture. 2025;54(3):237-250. doi:10.1515/pdtc-2025-0007.
3. UNESCO. Culture working group: background paper on culture and digital technologies. Paris: UNESCO; 2023. Available from: <https://www.unesco.org/sites/default/files/medias/fichiers/2023/04/India%20CWG%20Background%20Paper%20Priority%204%20%282%29.pdf>

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author



विभा सिंह साहू राम स्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली, महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत में शोधार्थी हैं। उनका शोध अकादमिक अध्ययन एवं अनुसंधान पर केंद्रित है। वे अपने शोध के माध्यम से विषयगत ज्ञान के विस्तार, नवीन दृष्टिकोणों के विकास तथा शैक्षणिक क्षेत्र में योगदान देने के लिए प्रयासरत हैं।